National Conference on Advanced Research in Science, Engineering, Management and Humanities
(NCARSEMH – 2025)
27th July, 2025, Jharkhand, India.

CERTIFICATE NO : NCARSEMH /2025/ C0725716

सूर्यबाला के उपन्यास साहित्य में समाज के यथार्थ का चित्रण

Kunchikorave Dipa Prakash

Research Scholar, Department of Hindi, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

शोध सारांश:

सूर्यबाला के कथा-साहित्य में आधुनिक भारतीय समाज की ज्वलंत सामाजिक समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उनके उपन्यासों और कहानियों में गरीबी, बेरोजगारी, स्त्री उत्पीड़न (जिसमें बलात्कार और अनमेल विवाह शामिल हैं), पारिवारिक कलह और विघटन, महानगरीय जीवन की चुनौतियाँ और मलिन बस्तियों की अमानवीय स्थितियाँ प्रमुखता से उभरती हैं। 'अग्निपंखी' और 'सुबह के इंतजार तक' जैसी कृतियों में गरीबी और बेरोजगारी के भीषण दृश्य, वहीं 'मेरे संधिपत्र' में पितृसत्तात्मक सोच, अनमेल विवाह और कुंठाग्रस्त स्त्री की व्यथा को दर्शाया गया है। 'सुबह के इंतजार तक' बलात्कार की शिकार नारी के संघर्ष और समाज के क्रूर रवैये को उजागर करता है। 'अग्निपंखी' ग्रामीण पारिवारिक कलह और महानगरों में झोपड़पट्टी के नारकीय जीवन को चित्रित करता है, जबकि 'दीक्षांत' शिक्षा संस्थानों में व्याप्त भ्रष्टाचार और उसके पारिवारिक विघटनकारी प्रभावों पर प्रकाश डालता है। सूर्यबाला का साहित्य इन सामाजिक बुराइयों की गहरी जड़ों और उनके मानवीय परिणामों को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करता है, जिससे पाठक इन मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित होते हैं।

बीज शब्द - समाज, सामाजिक समस्याएँ, हिंदी उपन्यास, सामाजिक यथार्थ, नारी चित्रण, आर्थिक स्तिथि।